PAPER-III
PHILOSOPHY

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________________

   (Name) ____________________________

2. (Signature) ____________________________

   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.____________________________

(In words)

J 0 3 1 1

Time : 2 $^1/_2$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।
   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थी इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार दें ।

SECTION – I
खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खंड में **बीस–बीस (20)** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. What is <u>nirvāna</u> according to Buddhism ? Explain.
बौद्ध मत के अनुसार निर्वाण क्या है ? विवेचना कीजिए ।

OR/अथवा

Bring out a comparison between the idealism of Plato and Hegel.
प्लेटो और हेगल के प्रत्ययवाद की तुलना कीजिये ।

2. Give an exposition of <u>anekāntavāda</u>.
अनेकान्तवाद की व्याख्या दीजिये ।

OR/अथवा

Explain Aristotle's theory of causation.
अरस्तु के कारण-कार्य विषयक सिद्धान्त को स्पष्ट करें ।

SECTION – II
खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions contained therein. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 Marks)**

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के **तीनों** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I / एच्छिक – I

3. How does Christianity reconcile Divine omniscience and omnipotence with human free will ? Discuss.
ईसाई धर्म किस प्रकार मानवीय इच्छा स्वातन्त्र्य के साथ दिव्य सर्वज्ञता तथा सर्वशक्तिमत्ता का सामंजस्य करता है ? विवेचना करें ।

4. Discuss the commonalities and differences between Buddhism and Jainism.
बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के बीच समानताओं तथा अन्तरों की विवेचना कीजिये ।

5. Explain the conception of soul in Zoroastrianism.
पारसी धर्म में आत्मा की अवधारणा की व्याख्या कीजिये ।

Elective – II / एच्छिक – II

3. Bring out Frege's distinction between concept and object.
फ्रेगे द्वारा संप्रत्यय और वस्तु के बीच विभेद बताइये ।

4. What are Strawson's arguments against Russell's theory of descriptions ?
रसेल के निश्चियात्मक वर्णन के सिद्धान्त के विरुद्ध स्ट्रासन की युक्तियाँ क्या हैं ?

5. Discuss Quine's critique of the theory of meaning of the logical positivist.
तार्किक भाववाद के अर्थ सिद्धान्त की क्वाइन की आलोचना की विवेचना कीजिये ।

Elective – III / एच्छिक – III

3. Explain the concept of 'context' in Hermeneutics.
भाष्य विज्ञान में 'संदर्भ' के संप्रत्यय की व्याख्या कीजिये ।

4. Write a note on understanding with special reference to the 'human sciences'.
'मानव विज्ञानों' के विशेष संदर्भ में बोध पर टिप्पणी लिखिए ।

5. What is the aim of phenomenological reduction ? Discuss following Husserl.
दृश्य प्रपंच शास्त्रीय रूपान्तर का लक्ष्य क्या है ? हुसर्ल का अनुगमन करते हुए इसकी विवेचना कीजिये ।

Elective – IV / एच्छिक – IV

3. Explain the standpoints of Śaṁkara and Rāmānuja on Brahman.
ब्राह्मण पर शंकर और रामानुज के दृष्टिकोणों को स्पष्ट कीजिये ।

4. State and explain the relation between māyā and world according to Śaṁkara.
शंकर के अनुसार माया तथा जगत के बीच सम्बन्ध बताइये और स्पष्ट करें ।

5. Discuss how Śaṁkara, Rāmānuja and Madhva explain the concept of mokṣa.
शंकर, रामानुज तथा माधव ने मोक्ष के संप्रत्यय की व्याख्या किस प्रकार की है विवेचना कीजिये ।

Elective – V / एच्छिक – V

3. Explain Gandhi's views on self, world and God.
आत्मा, संसार तथा ईश्वर पर गांधीजी के विचारों की व्याख्या करें ।

4. What is Satyāgraha ? Is it relevant to the present day world ?
सत्याग्रह क्या है ? क्या यह वर्तमान समय के विश्व में प्रासंगिक है ?

5. What, according to Gandhi, are the moral foundations for good life ?
गांधी के अनुसार उत्तम जीवन के नैतिक आधार क्या हैं ?

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 Marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Explain the difference between vyāvahārika sattā and pāramārthika sattā.
व्यवहारिक सत्ता तथा परमार्थिक सत्ता के बीच अन्तर को स्पष्ट करें ।

7. Explain Aristotle's notion of substance.

अरस्तु के अनुसार पदार्थ की धारणा को स्पष्ट करें ।

8. Give an exposition of arthāpatti (implication) according to Prabhākara.
प्रभाकर के अनुसार अर्थापत्ति (निहितार्थ) की व्याख्या पेश करें ।

9. Explain Descartes' criterion of truth.
देकार्त के अनुसार सत्य के मानदंड की व्याख्या करें ।

10. Explain the different forms of pratyakṣa in Nyāya.

न्याय में प्रत्यक्ष के भिन्न रूपों को स्पष्ट कीजिये ।

11. Explain the Jaina conception of Triratna.
जैन मत के अनुसार त्रिरत्न के संप्रत्यय की व्याख्या करें ।

12. Explain the concept of distributive justice.
वितरणात्मक न्याय के संप्रत्यय की व्याख्या करें ।

13. Discuss Kant’s theory of morality.
नैतिकता के बारे में कांट के सिद्धान्त की विवेचना करें ।

14. Bring out the distinction between truth and validity.
सत्य तथा वैधता के बीच अन्तर करें ।

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

The inappropriateness of describing Kant's system as a synthesis of rationalism and empiricism becomes clear if we recall his fundamental problem, the pervasive problem, so to speak, of his philosophy. As we saw, he was faced with the problem of effecting a harmonization between the world of Newtonian physics, the world of mechanistic causality and determinism, and the world of freedom. True, Descartes also had been faced with an analogous problem: it was not a problem peculiar to Kant but one which arose out of the historical situation when natural science had once begun its remarkable development. But the point is that in grappling with this problem Kant submitted to critical examination both rationalism and empiricism and worked out his own philosophy, not as a synthesis of these two movements, but as a triumph over them. Empiricism, he thought, is inadequate because it is unable to account for the possibility of synthetic *a priori* knowledge. If we take scientific knowledge seriously, we cannot embrace sheer empiricism, even if we agree that all knowledge begins with experience. We must have recourse to a theory of the *a priori* formal element in knowledge. That is to say, we cannot explain the possibility of scientific knowledge if we assume that experience is simply given: we have to allow for the subject's construction of experience if we are going to account for the possibility of *a priori* knowledge. But this does not mean that we should accept rationalist metaphysics. If anyone takes moral experience, freedom and religion seriously, it may seem to him that the dogmatic metaphysics of the rationalist philosophers, at least of those who allowed for freedom, offers a sure rational basis for the moral law and for belief in freedom, immortality and God.

कांट के दर्शन को बुद्धिवाद और अनुभववाद के समन्वय रूप में वर्णन करने की अनुपयुक्तता स्पष्ट हो जाती है जब, हम उनके दर्शन से सम्बन्धित उनकी मूलभूत समस्या, व्यापक समस्या का स्मरण करते हैं । जैसा कि हमने देखा, वह न्युटनवादी भौतिकशास्त्र के जगत, यन्त्रवादी कारणत्व और नियतिवाद के जगत तथा स्वातन्त्र्य के जगत के बीच सामंजस्य लाने की समस्या से जूझ रहे थे । सत्य है कि डेकार्त भी इसी के समान समस्या का सामना कर रहे थे । यह सिर्फ कांट की ही व्यक्तिगत समस्या नहीं थी, परन्तु यह ऐसी समस्या थी जो ऐतिहासिक स्थिति से उत्पन्न हुई थी जब प्राकृतिक विज्ञान ने अपना असाधारण विकास प्रारम्भ कर दिया था । परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि कांट ने इस समस्या के साथ जूझने में बुद्धिवाद तथा अनुभववाद दोनों की आलोचनात्मक परीक्षा की और उन्होंने अपना खुद का दर्शन विकसित किया, उन दोनों आन्दोलनों के संश्लेषण के रूप में नहीं की बल्कि उन पर विजय के रुप में । उन्होंने सोचा कि अनुभववाद अपर्याप्त है क्योंकि यह संश्लेषित प्रागनुभविक ज्ञान की संभाविता का स्पष्टीकरण नहीं दे सकता है । यदि हम वैज्ञानिक ज्ञान को गम्भीरता पूर्वक लेते हैं, तो हम निरे अनुभववाद को नहीं अपना सकते हैं, चाहे हम मान भी लें कि समस्त ज्ञान अनुभव के साथ प्रारम्भ होता है । हमें ज्ञान में प्रागनुभविक औपचारिक तत्त्व के सिद्धान्त का सहारा लेना पड़ता है । यानि कि, यदि हम मान लेते हैं कि अनुभव एकदम प्रदत्त मात्र है तो हम वैज्ञानिक ज्ञान की संभाविता को स्पष्ट नहीं कर सकते हैं : यदि हम प्रागनुभविक ज्ञान की संभाविता का कारण बताने जा रहे हैं तो हमें ज्ञाता द्वारा अनुभव की गई संरचना की गुंजाइश

रखनी पड़ती है । परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें बुद्धिवादी तत्त्वमीमांसा को स्वीकार कर लेना चाहिये । यदि कोई नैतिक अनुभव, स्वतन्त्रता और धर्म को गम्भीरतापूर्वक लेता है, तो उसे ऐसा प्रतीत हो सकता है कि बुद्धिवादी दार्शनिकों की रूढ़िवादी तत्वमीमांसा, कम से कम उन दार्शनिकों की जिन्होंने स्वतन्त्रता की गुंजाइश रखने दी, नैतिक नियम के लिये तथा स्वतन्त्रता, अमरता और परमेश्वर में विश्वास के लिये निश्चित बौद्धिक आधार पेश करती है ।

15. What is Kant's fundamental problem ?
कांट की मूलभूत समस्या क्या है ?

16. Why, according to Kant, empiricism is inadequate ?
कांट के अनुसार, अनुभववाद अपर्याप्त क्यों है ?

17. Why cannot we accept rationalist metaphysics, if we admit that empiricism is inadequate ?
यदि हम मानते हैं कि अनुभववाद अपर्याप्त है, तो हम बुद्धिवादी तत्त्वमीमांसा को क्यों नहीं स्वीकार कर सकते हैं ?

18. What is required to account for the possibility of <u>apriori</u> knowledge ?
प्रागनुभविक ज्ञान की संभाविता का स्पष्टीकरण देने के लिये क्या मानना जरूरी है ?

19. What contribution of dogmatic metaphysics does Kant appreciate ?
कांट रूढ़िवादी तत्वमीमांसा के किस योगदान की सराहना करते हैं ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....